Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Shram dan

श्रमदान

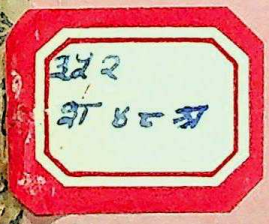

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

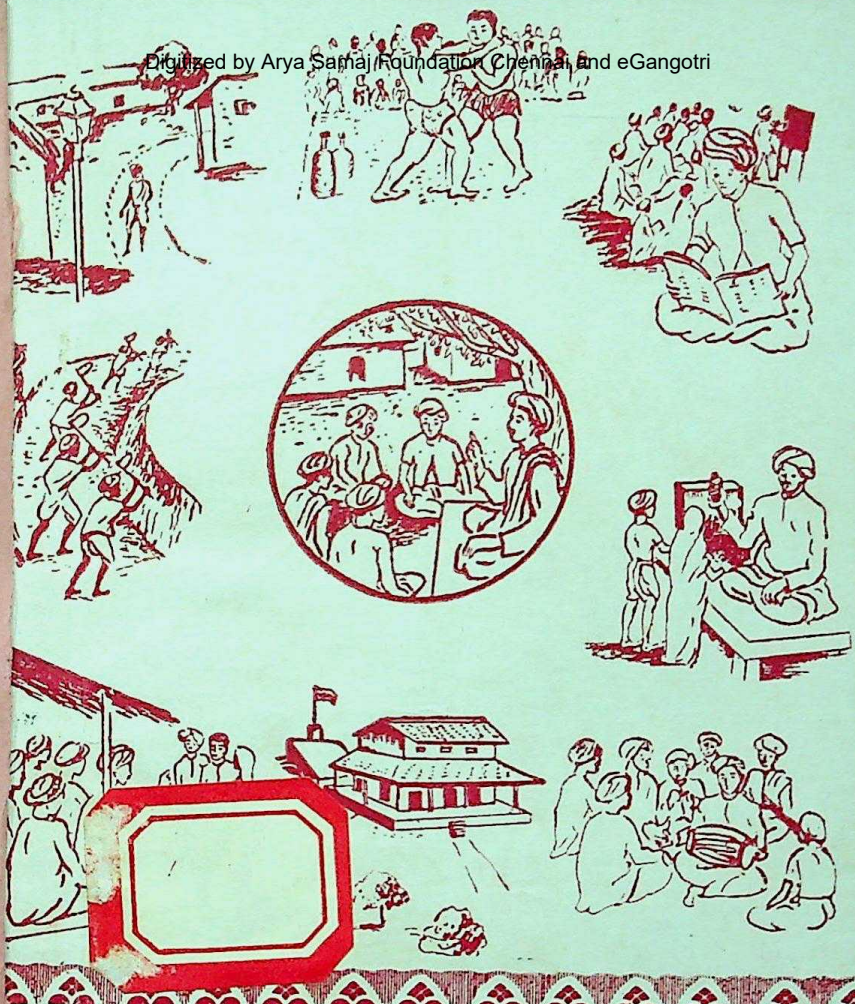

श्रमदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

245.1
P.A.T.C.

पंचायत ज्ञान माला :

श्रमदान

लेखक :
ब्रह्मस्वरूप शर्मा
बी० ए०, साहित्यरत्न

Library

सर्वोदय प्रकाशन, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :
सर्वोदय प्रकाशन,
चावड़ी बाजार,
दिल्ली–६

P. R. T ary
Guruku war)
Class 342
Book No. श्री ४८ प्र
Acc. No.

मूल्य :
सैंतीस नए पैसे

मुद्रक :
मल्हीपुर ब्रांच प्रेस,
सहारनपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

245

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो शब्द

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आपकी संस्था ने पंचायत ज्ञान-माला प्रकाशन का प्रशंसनीय कार्य हाथ में लिया है।

पुस्तक को देखते हुए मुझे आशा है कि ये पुस्तकें अधिक से अधिक जनता को पंचायत राज्य के उद्देश्यों से परिचय प्राप्त करा सकेंगी।

आपने सरल भाषा और मोटे टाईप का सराहनीय प्रबन्ध किया है। मैं समझता हूं कि इस विषय में आपका यह प्रयास नितांत नया है। ये पुस्तकें ग्राम सभा, ग्राम पंचायत और न्याय पंचायत से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति के लिये बड़े काम की चीज हैं।

वास्तव में पूज्य राष्ट्रपिता का स्वराज्य का आदर्श उस समय तक पूरा नहीं होता जब तक गांव की भोली जनता अपना उत्तरदायित्व न समझे। इस पथ में यह पुस्तक माला बहुत उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

सहारनपुर
४-६-५६

भोजराजसिंह
जिला पंचायत अधिकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम राज्य के लिए लड़ाई लड़नी है !

स्वराज्य के लिए तो लड़ाई हो गई; लेकिन उससे भी कठिन लड़ाई आगे ग्राम राज्य के लिये होने वाली है। आज तक हमने जो लड़ाई लड़ी, वह अहिंसात्मक थी। वैसे यह लड़ाई भी अहिंसात्मक होगी। उस लड़ाई के सिपाही आप सारी बहनें और भाई होंगे। उस युद्ध में हमारे औज़ार होंगे चरखा और हल। हमारे युद्ध के लिए हमें बम की जरूरत नहीं है, तोपों की भी जरूरत नहीं है। हमें जरूरत है काम करने और काम करने के औजारों की।

—विनोबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमदान

आजादी लेने के बाद से हमारी सरकार अपने देश को धनीमानी और सुखी बनाने में लगी हुई है। हमारे देश की ८० फीसदी जनता गांवों में रहती है इसलिए गांवों की उन्नति ही देश की उन्नति है। पूज्य बापू के सारे रचनात्मक (ठोस) कामों का मतलब यही रहा कि भारत के गांव जागें, अपने पैरों पर खड़े हों, दूसरों का मुंह न ताकें और अपने दुख और तकलीफों को अपने आप मिटा डालें। वह जानते थे कि आजादी मिल जाने पर भी उस समय तक कोई लाभ नहीं होगा, जब तक गांवों के लोग अपने आप नहीं उठेंगे और अपनी सामाजिक दशा को अपने आप नहीं सुधारेंगे।

इसी कारण पूज्य बापू ने अपनी सारी योजनाओं में मुख्य बात यही रखी है कि गांव अपने ही परिश्रम से अपनी जरूरत की चीजें पैदा कर सकें। उन्होंने देखा कि बड़े-बड़े कल और कारखाने गांवों के लोगों को गरीबी के चंगुल से उभरने नहीं देंगे। इसी कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने गांव वालों को यह शिक्षा दी कि वे अपनी पैदा की हुई चीजों पर ही गुजर करने की आदत डालें। खेती से वे अपने लिए रोटी के सवाल को हल कर लेते हैं, तो चर्खे के द्वारा वे अपने कपड़े की समस्या को सुलझा लें।

गांव के आदमी अपने मामलों (मुकदमों) में किसी अदालत का मुंह न ताकें। अपना भोजन, अपनी पढ़ाई, अपने स्वास्थ्य और अपनी शांति को बनाये रखने में गांव वाले अपने परिश्रम के महत्व को समझ जायें। इसी तरह की व्यवस्था (इन्तजाम) को बापू जी एक राज्य कहा करते थे।

किसी ने सच ही कहा है कि देश की धन दौलत, नालों और खेतों में उतनी नहीं होती जितनी उनका उपयोग करने वाले देशवासियों में होती है। जिस तरह जमीन में गड़ा हुआ धन बेकार हो जाता है, इसी तरह वह जनता जो अपने बाहुबल से काम नहीं लेती, राष्ट्र की दौलत न बनकर राष्ट्र का भार बन जाती है।

'श्रम ही सो सब मिलत है बिन श्रम मिले न काहो'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक है बिना परिश्रम किये मनुष्य को संसार में कुछ भी प्राप्त नहीं होता। छोटे बच्चे के उदाहरण को ही देखें तो उसे भी मां से दूध मांगने के लिए रोना या चिल्लाना पड़ता है। मनुष्य के शरीर की बनावट ही कुछ इस तरह की है कि परिश्रम के बिना जीवित रहना भी कठिन है। हमें यदि बना बनाया भोजन मिल जाए तो इसे भी जब तक हाथ उठाकर मुंह तक नहीं ले जायेंगे और दांत से चबाकर बारीक नहीं करेंगे, तो कुछ लाभ नहीं। यही नहीं इस चबाये हुए भोजन का रस बनाने के लिए हमारे मेदे को काफी परिश्रम करना पड़ता है। यदि दुर्भाग्यवश किसी का मेदा काम (परिश्रम) करना बन्द करदे तो डाक्टर यही सलाह देते हैं कि यदि इस आदमी की दशा कुछ और दिन ऐसी ही चलती रही तो इसकी मृत्यु निश्चित है। इसी तरह उस समाज की भी मृत्यु हो जाती है जो परिश्रम से मुँह फेर कर चलता है।

अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक और दार्शनिक कार्लाइल ने तो यहां तक कहा है कि—'श्रम ही सबसे अच्छी पूजा है और परिश्रम से ही सभ्यता जीवित रहती है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का इतिहास दो ही बातों को आधार बना कर आगे बढ़ा है। एक उन जातियों की चर्चा जो परिश्रमी एवं काम करने वाली थीं और दूसरी वे जातियां जिन्होंने परिश्रम को हिमाकत समझा और आलसी बन बैठीं। पुरानी एक बात चली आती है कि जिस समय अंग्रेजों ने लखनऊ का घेरा डाल लिया और वाजिदअली शाह की गिरफ्तारी के लिए उसके महल की तरफ बढ़े तो देखा कि कभी वाजिद अली शाह इस पलंग पर उछल रहे हैं और कभी उस पलंग पर; आखिर पकड़े गए। पकड़े जाने पर एक अंग्रेज ने उनसे पूछा कि नवाब साहब आखिर आपने भागने का उपाय क्यों नहीं सोचा। नवाब साहब ने जवाब दिया कि उस समय मेरे पैर नंगे थे और जूता पहचाने वाले सब नौकर-चाकर पहिले से ही भाग गए थे।

परिश्रम से दूर होकर मनुष्य कहां जा पहुंचता है, मुगल साम्राज्य का पतन इसका जीता जागता उदाहरण है। परिश्रम से जातियां समय और ईमानदारी का सबक सीखती हैं, और आलस जातियों को विलासी और मक्कार बना देता है। इसलिए यदि कोई जाति संसार में जीना चाहती है, और सम्मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जीना चाहती है तो इसका सस्ता और बढ़िया नुस्खा यही है कि वह परिश्रम करना सीखे।

आज हमारे सामने ऐसे अनेक काम हैं जो हमारे अपने किये से ही पूरे होंगे। हमें अपने आसरे चलना है। सरकार ने हमारा प्रबन्ध हमारे हाथ में दिया, इसको सम्भालने के लिए हमें जागने की जरूरत है। हमें परिश्रम से उन चीजों को पैदा करना होगा, जिनका होना हमारे लिए आवश्यक है।

यह माना कि माली हालत को देखते हुए हमारे देश में अभी बहुत गरीबी है लेकिन क्या वह देश गरीब हो सकता है जिसके पास ६० या ७० हजार हाथों की ताकत मौजूद हो। हमारे पास बापू जैसे महापुरुषों का आशीर्वाद मौजूद हैं। हमें जरूरत है सिर्फ लग्न से और परिश्रम से काम करने की।

हमें अपने परिश्रम से ही उजाड़ और बंजड़ भूमि की सिंचाई के साधन खड़े करने हैं। हर गांव में बिजली की रोशनी पहुंचानी है। पशुओं को बीमारी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचाना है, सड़कें और रास्ते बनाने हैं, स्वास्थ्य सुधार के लिए परिश्रम करना है, छूत की बीमारियों का डट कर मुकाबला करना है। रेतीली और पथरीली भूमि में हरे भरे खेत लगाने हैं। इसी तरह हमारे सामने बहुत सी समस्याएं हैं, जिन्हें पूरा करने पर हमारे गांवों में कुछ जीवन दिखाई देगा।

हमारा काम

आज गांव के रहने वाले नवयुवक गांव की तकलीफों और रूखेपन से घबरा कर शहरों की तरफ जा रहे हैं और पढ़े लिखे नवयुवक भी गांव में रह कर उसकी उन्नति में सहायता देने के लिए तैयार नहीं हैं।

हम बहुत जल्दी ही गांव की दशा को सुधार कर, गांव में ही उन सब सुविधाओं को लायें जो बहुत से शहर वालों को मिली हुई हैं।

हमें गांव की एक ऐसी आबादी बनाना है जहां शहरों के सब आराम और गांव की पुरानी भाई-चारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बातें मौजूद हों। साथ ही यह भी ध्यान रखना है कि हमारी इस कोशिश में गांव की सादगी और सरलता खोई न जाय और शहरों के खुदगर्जीपन से बचते रहें।

पैसे की कमी

हमें अपने ऊपर लिखे हुए काम करने में सरकार से इमदाद का आसरा नहीं लेना है बल्कि इन सब कामों को हमें मिलजुल कर, अपने आप ही पूरा करना है। हर गांव सभा के परिश्रम का सहयोग, हमारी ऊपर लिखी योजनाओं को पूरा करने में वह काम करेगा जो धन के बल पर पूरा नहीं करा जा सकता। ३५ करोड़ जनता के देश के लिये यह कुछ भी कठिन नहीं है कि उस देश के निवासी देश की उन्नति और अपनी सुविधाओं के लिए अपनी थोड़ी सी मेहनत का दान दे दें।

श्रमदान क्या है ?

आज से पहिले जमाने में लोग मेहनत करना बहुत बुरा समझते थे। जमींदार और मालिक लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी कोठियों और बंगलों के भीतर आराम से लेट कर समय बिताते थे और उनके नौकर चाकर गर्मी की चिलचिलाती तेज धूप और सर्दी की ठिठुराने वाली हवा के झोकों में भी काम करते थे। ये नौकर चाकर अपनी इच्छा से काम नहीं करते थे बल्कि भय या स्वार्थी थे, इसलिये इनका ऐसा परिश्रम जमीदारों और मालिकों के लिए जहर के प्याले की तरह मारने वाला सिद्ध हुआ।

परन्तु आज आजादी का युग है। आज के युग में सबको उभरने और पनपने का बराबर मौका है। आज कोई भी बड़ा आदमी किसी की इच्छा के विरुद्ध उससे काम नहीं ले सकता।

अपनी इच्छा से अपनी उन्नति के लिए शरीर से मेहनत करना 'श्रमदान' कहलाता है। इस परिश्रम को दान कहा गया है और जो दबाव से, बल से और भय से परिश्रम कराया जाता था वह बेगार कहलाता था। अपनी इच्छा और खुशी से दिया हुआ मेहनत का थोड़ा सा सहयोग इस काम को पवित्र बना देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमदान की शक्ति

पुरानी कहावत है कि तिनके में इकले कोई शक्ति नहीं परन्तु बहुत से तिनकों को मिला कर मजबूत रस्सा बना लिया जाता है। उस रस्से में हाथी जैसे भयंकर और बलवान पशु को बांध कर रखा जा सकता है। सीकों को ही देखिये इकली सींक से आंगन नहीं झाड़ा जा सकता परन्तु बहुत सी सीकों को झाड़ू बना कर कूड़े के मनों ढेर को खिसका कर, हम दूर कर देते हैं।

इसी प्रकार दो हाथों की शक्ति किसी बड़े काम को पूरा करने के लिए काफी नहीं होती और बहुत से हाथ एक ही साथ मिल कर इतना बड़ा काम कर दिखाते हैं कि मनुष्य हैरान रह जाता है।

उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश में पिछले वर्ष श्रमदान सप्ताह (२७ जनवरी से २ फरवरी तक) मनाया गया, जिसमें ८७५ नए तालाब खोदे गये। २०० मील से अधिक गुल बनाई। २०० नए कुएं बनवाये, ७५० पुराने कुओं की मरम्मत की गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५०० बंधियां बनाई गईं। ५० एकड़ भूमि में पेड़ लगाये गए। ३५,००० गड्ढे खाद के लिए खोदे गये, ३०,००० सोख्ता गड्ढे बनाये गये। २०० मील लंबी नालियां और ३५०० मील से अधिक लम्बी सड़कें बनाई गईं। इन कामों में लगाये गये परिश्रम की लागत लगभग एक करोड़ रुपया होती है।

अब हम समझ सकते हैं कि श्रमदान में कितनी महान् शक्ति है। हमारा सात दिन का परिश्रम १ करोड़ रुपये का होता है। इस तरह श्रमदान से हम अपनी कितनी योजनाओं को पूरा कर सकते हैं।

अपनी आवश्यकता

श्रमदान का कार्यक्रम बनाते हुए सबसे पहिले गांव सभा को अपनी एक योजना बना लेना उचित है। उदाहरण के लिए गांव सभा को यह काम सोच लेना चाहिए कि कितने नये तालाबों के बनाने की आवश्यकता है? कितने पुराने तालाबों को गहरा बनाना है? कितने तालाबों, नालियों और गूलों की सफाई की जानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी तरह सफाई और स्वास्थ्य के कामों पर विचार करते हुए, सोख्ता गड्ढों, पाखानों और व्यायाम शालाओं का अनुमान कर लेना चाहिए।

सार्वजनिक कामों पर विचार करते हुए पंचायत घरों, गांधी चबूतरों, पाठशालाओं और औषधालयों के निर्माण इत्यादि का अनुमान कर लेना चाहिए।

इससे गांव सभा के सदस्यों को यह पता लग सकेगा कि हमें अपने परिश्रम से क्या कुछ करना है। और इस तरह गांव की दशा में क्या सुधार हो सकता है।

श्रमदान के लिये योजना

श्रमदान के आरम्भ करने से पहले ही गांव सभा को यह अनुमान कर लेना आवश्यक है कि उसके पास कितनी शक्ति है और कितना काम है। फिर अपनी ताकत से परिश्रम करने वाले सदस्यों की शक्ति का विचार करते हुए या तो सब मिल जुल कर पहिले एक काम को पूरा करलें, फिर दूसरा काम हाथ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें या काम करने वालों की अलग-अलग टोलियां बना कर, अलग-अलग काम बांट दिया जाय। परन्तु अधिक अच्छा यह होगा कि गांव सभा पहिले उन कामों को हाथ में ले जो शीघ्र ही पूरे हो जायें। इस से ज्यों-ज्यों काम पूरा होता जायगा त्यों-त्यों लोगों में उत्साह बढ़ेगा। श्रमदान की योजना और काम पर गांव सभा को अपनी बैठक बुला कर विचार कर लेना चाहिए और बहुमत के अनुसार ही काम किया जाय। क्योंकि जितने अधिक व्यक्ति किसी काम की आवश्यकता अनुभव करेंगे, उतना ही अधिक श्रमदान प्राप्त हो सकेगा।

टिकाऊ तथा चलते काम

श्रमदान के कामों को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है। एक वह काम जिन्हें एक बार पूरा कर देने पर वर्षों तक उनके दोबारा करने की जरूरत नहीं पड़ती जैसे नहर खोदना, पंचायतघर बनाना, गांधी चबूतरा तथा सड़क बनाना इत्यादि, ऐसे कामों को टिकाऊ काम कहेंगे। दूसरे वह काम जिन्हें हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने या किसी खास मौसम में हर साल करना पड़ता है जैसे गांव की सफाई और पेड़ों का लगाना इत्यादि। यह काम चलते काम हैं क्योंकि गांव में सफाई का काम तभी ठीक रह सकेगा, जब हर महीने ही श्रमदान से गांव की सफाई होती रहेगी। इसी तरह पेड़ लगाने के लिए वर्षा का मौसम बहुत अच्छा है। चलते कामों के लिये यदि महीने की कोई सी तारीखें तय कर ली जाये तो सुविधा हो सकती है। जैसे गांव सफाई का सवाल है। सब गांव वाले यदि पूर्णमासी, अमावस्या या किसी और इसी तरह की तिथि को सुबह और शाम एक एक घन्टा इस काम में लगायें तो गांव की सफाई का प्रश्न बहुत अच्छी तरह से हल हो सकता है। अब दूसरे चलते कामों में ही वह काम भी आते हैं जो वर्षा की मौसम पर ही ठीक हो सकते हैं जैसे सामुदायिक बगीचे या पेड़ों के लिए थाले तैयार करना इत्यादि। इन कामों में गांव वालों को श्रमदान का काम एक या दो दिन तक करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिकाऊ काम करने के लिए पूरे देश में सर्दी की मौसम में श्रमदान सप्ताह मनाया जाता है। यह समय २७ जनवरी से २ फरवरी तक होता है। इस मौके पर नई सड़कों का बनाना, पुरानी सड़कों की मरम्मत और तालाब के बनाने आदि के काम होते हैं। कुछ काम ऐसे भी हैं जो कई गांव सभाओं को मिल कर ही करने चाहियें जैसे पुल का बनाना, एक गांव से दूसरे गांव को जाने वाली सड़क, नहर और बांध का बनाना आदि।

श्रमदान के काम को कराते समय इस बात का ध्यान रखना भी आवश्यक है कि किसी जाति और जमात के आदमी इस काम से खाली न रह जायें। साथ ही सब लोगों को उनकी शक्ति के अनुसार ही काम भी बांटना चाहिए। जैसे जवान और मजबूत आदमियों को ऐसा काम जिसमें अधिक परिश्रम हो और बच्चों, बूढ़ों, और स्त्रियों को वह काम जो बहुत हल्का हो, दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमदान के दिनों में मनोरंजन (खेल कूद)

श्रमदान के दिनों में लोगों की थकावट को दूर कर उनमें ताजगी लाने की बात पर विचार करना भी बहुत आवश्यक है। इसके लिए श्रमदान के दिनों में शाम के समय, गीत, हंसी, मजाक, नाटक चम्बोले नाच और चुटकलों इत्यादि का प्रबन्ध होना चाहिए। यह गीत और नाटक इत्यादि भी यदि श्रमदान की बाबत ही बनाये जायें तो बहुत ही सुन्दर होगा।

श्रमदान का काम समाप्त होने पर एक मीटिंग बुलाकर उन लोगों के कष्टों की सराहना की जाए जिन्होंने श्रमदान में बहुत हिम्मत से काम किया है और बाकी सभी लोगों को धन्यवाद देना चाहिए।

शिक्षण शिविर या ट्रेनिंग कैम्प

श्रमदान के काम का आरम्भ करने से पहिले गांव वालों को श्रमदान की बाबत कुछ सीखना भी आवश्यक है। अच्छे ओवरसियर और इन्जीनियर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखभाल में एक ट्रेनिंग कैम्प खोलना चाहिए, जहां पर गांव वालों को सड़क बनाने, पुल बनाने, बांध लगाने और नहर खोदने की शिक्षा दी जाय। इन कैम्पों में प्रांतीय रक्षादल तथा सिंचाई विभाग के कर्मचारियों से भी सहायता प्राप्त करना उचित ही है। इन ट्रेनिंग कैम्पों में भी संध्या समय मनोरंजन (खेल कूद) का प्रबन्ध होना आवश्यक है क्योंकि दिन भर काम सीख कर थके लोगों को खेल कूद इत्यादि से कुछ ताजगी मिल जाती है।

सब का सहयोग

गांव की उन्नति और सफलता के लिए गांव के अन्दर फैली हुई गुटबन्दी का दूर होना बहुत ही आवश्यक है। श्रमदान का काम तो पूरी जनता के सहयोग के बिना चलना असम्भव है। इसके लिए सब लोगों को संगठित करने का काम उन लोगों के हाथ में सौंपा जाय जो मिलनसार, शांत स्वभाव और विनयशील हो तो लोगों का अधिक सहयोग मिलने की आशा है। क्योंकि संसार में प्रेम और विनय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल पर जो काम बन सकता है वह किसी दूरी तरह से पूरा नहीं होता।

उत्साह ढीला न पड़े

श्रमदान के समय लोगों में बहुत बड़ी कमी दिखाई देती है। जितने मनुष्य श्रमदान में पहिले दिन भाग लेते हैं दूसरे दिन उससे कम और तीसरे दिन उससे भी कम रह जाते हैं, इस तरह से जो आदमी काम पर लगे रहते हैं, उनका उत्साह भी ढीला पड़ जाता है। इसलिए ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि जो लोग पहिले दिन श्रमदान करने आये थे, बाद में भी लगातार आते ही रहें। यदि किसी कारण से कोई व्यक्ति किसी दिन न आ सके तो उसे अपनी इस दिन की कमी को कभी दूसरे दिन आकर पूरा कर देना चाहिए। साथ में इस बात की भी पूरी कोशिश बनी रहे कि कोई काम किया जाए वह ठोस हो, खाना पूरी के लिए या दिखावट के लिए श्रमदान न किया जाए।

श्रमदान की सहायता से जो नहर, तालाब, पुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या सड़क आदि बनाए जायें, उनका उपयोग होता रहे। यदि बनाई हुई चीज को काम में ही न लिया गया तो श्रमदान का धन बेकार में ही चला जाता है। इसलिए श्रमदान से पहिले ही यह विचार कर लेना बहुत जरूरी है कि उन्हीं कामों के लिए गांव वालों की शक्ति को खर्च किया जाये जिनकी वहां आवश्यकता हो। इनसे लगातार उन चीजों का उपयोग भी बना रहेगा और लोग श्रमदान के महत्व को भी समझेंगे।

काम पूरा किया जाये

अधूरे काम नाकामयाबी की निशानी हैं, इस कहावत को दिमाग में रखते हुए श्रमदान करने वाले लोग जो काम हाथ में लें, उसे पूरा करना आवश्यक है। बहुत बार यह देखा जाता है कि सार्वजनिक जो काम एक बार कुछ अधूरे रह जाते हैं उनके पूरा होने का फिर नम्बर नहीं आता। कितनी ही चौपालों में लिपाई के समय एक कोना बच रहा तो वर्षों के बाद आज तक भी वह वैसा ही पड़ा हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसी तरह यदि गांधी चबूतरा, पंचायत घर आदि सार्वजनिक कार्य एक बार बनते हुए बीच में ही रुक जायें तो उनका अधूरापन लोगों में निराशा और कम हिम्मती के फैलाने का कारण बनता है। इसलिए हाथ में लिए हुए हर काम को पूरा करने की जी जान से कोशिश की जाए। यदि किसी कारण-वश कोई काम अधूरा रह भी जाय तो श्रमदान के अगले अवसर पर सबसे पहिले उसी काम को पूरा करने में जुट जाना चाहिए।

देखभाल और मरम्मत

किसी काम को एक बार पूरा कर देने से ही हमारा काम हमेशा के लिए पूरा नहीं हो जाता बल्कि उस काम की देखभाल और मरम्मत की ड्यूटी तो हमेशा के लिए बढ़ जाती है। यह देखने में आया है कि गांव सभाओं ने एक बार मिलजुल कर गांधी चबूतरे या पंचायत घर को बना तो दिया परन्तु बाद में उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं देता। लगातार मरम्मत न होने के कारण बने बनाये सुन्दर सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम कुछ समय के बाद बिलकुल खण्डर जैसे हो जाते हैं।

यदि पौधे लगाये गये है तो उन्हें गाय बकरी खा जाती हैं।

श्रमदान की असली कसौटी यही है कि जो भी काम किया जाय, गांव की जनता लगातार उसकी देखभाल करती रहे। जिस तरह उसके बनाने में उन्होंने अपनी ही ताकत के भरोसे काम लिया था इसी तरह मरम्मत और सफाई के समय भी वह किसी गैर का मुंह न ताकें।

श्रमदान के कामों की सूची

गांव सभायें श्रमदान के लिए नीचे लिखे हुए कामों को चुन सकती हैं।

स्वास्थ्य, सफाई और चिकित्सा से सम्बन्ध रखने वाले कामों में नीचे लिखे काम श्रमदान के सहयोग से किए जा सकते हैं।

१—पानी के कुओं का बनाना, उनकी मरम्मत और सफाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२–नहाने के लिए चबूतरे और मकान बनाना, उनकी मरम्मत करना और सफाई की देखभाल करना।

३–नालियां बनाना, उनकी सफाई और मरम्मत की देखभाल करना।

४–सोख्ता गड्ढे बनाना, उन्हें बदलना आदि के काम।

६–गड्ढेदार पाखाने तैयार करना।

६–व्यायाम शालायें बनाना, उनकी मरम्मत और देखभाल करना।

७–गांव की सफाई, सार्वजनिक वनों की सफाई, गड्ढों को भरना, कूड़ों को हटाना।

८–गांव के घरों की सजावट, मकानों की लिपाई पुताई, रसोई आदि का काम करना।

खेती और पेड़ लगाने के काम

१–तालाब बनाना, उनकी सफाई करना और मरम्मत करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—पुल और छोटी नहरों का बनाना, उनकी सफाई और मरम्मत का ध्यान रखना।

३—बांध बनाना, उनकी सफाई और मरम्मत का ध्यान रखना।

४—खाद के अच्छे गड्ढे तैयार करना।

५—सामुदायिक बगीचे और पौधे लगाना।

६—सामुदायिक बनों का लगाना।

७—सार्वजनिक रास्तों पर पेड़ों का लगाना।

रास्ते इत्यादि का काम

१—सड़क बनाना, उनकी मरम्मत और सफाई का काम करना।

२—गलियारों की मरम्मत और सफाई का काम।

३—गांव की सड़कों पर खंड़जे लगवाना और उनकी मरम्मत करना।

४—छोटे-छोटे पुलों का बनाना, उनकी मरम्मत व देखभाल करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वजनिक निर्माण का काम

१–पंचायतघर बनाना तथा उसकी मरम्मत इत्यादि की देखभाल करना।

२–गांधी चबूतरों का निर्माण तथा मरम्मत करना।

३–बीज घर बनाना और मरम्मत इत्यादि करना।

४–औषधालय और पाठशाला इत्यादि खोलना और इनके चालू रखने के लिए प्रबन्ध करना।

५–जच्चा बच्चा (दाई इत्यादि) का प्रबन्ध करना।

ऊपर लिखे हुए कामों को यदि गांव सभायें श्रमदान के द्वारा पूरा करने का प्रबन्ध करें, इससे गांव में एक नया जीवन दिखाई देने लगेगा।

श्रमदान के नारे

दान का कार्य करते समय यदि बीच-बीच में नीचे लिखे हुए नारों का भी प्रयोग किया जाए तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों का उत्साह नया ही बना रहेगा और काम करने में रुचि होगी।

१. एक घंटा देश को दो।
देश सुखी सम्पन्न हो॥

२. धरती मांग रही बलिदान।
वीरों बढ़ो करने श्रमदान॥

३. नये गांव का हो निर्माण।
वीरों उठो करो श्रमदान॥

४. जो चाहो स्वदेश उत्थान।
वीरों बढ़ो करो श्रमदान॥

५. मोहन का सर्वस्व महान्।
वीरों बढ़ो करो श्रमदान॥

६. सब से बड़ा कौन सा दान।
श्रम का दान, श्रम का दान॥

७. जगे गांव की क्या पहचान।
नारी नर करते श्रमदान॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. आज देश की यही पुकार ।
सब मित्र चलो करें श्रमदान ।।

९. आंधी हो या हो तूफान ।
नहीं रुकेगा यह श्रमदान ।।

१०. यही जमाने की ललकार ।
सब मिल चलो करो श्रमदान ।।

११. यही नेहरू की ललकार ।
उठो जवानों हो तैयार ।।

१२. राष्ट्र निर्माण यज्ञ है, बलिदान दो, २ ।
गरीबी को मिटाना है ,, ,,
बेकारी को भगाना है ,, ,,
बीमारी से पिंड छुड़ाना है ,, ,,
पैदावार बढ़ाना है ,, ,,
नूतन ग्राम बसाना है ,, ,,
पंचायत राज बनाना है ,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिश्रम के बिना संसार में किसी भी तरह की उन्नति नहीं की जा सकती। बिना मेहनत के कोई आदमी कुशल कारीगर नहीं बन सकता।

यदि किसी आदमी में बहुत बड़ी विचारने की ताकत है और वह बहुत बड़ा विद्वान है तो भी उसे जीवन में सफलता उस समय तक प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक उसमें लगातार काम करने की आदत न हो।

किसी ने कहा है कि सफलता के लिए ९९ फीसदी परिश्रम और १ फीसदी अकलमन्दी की जरूरत है। हाथ पर हाथ रखकर बैठने वाला न तो संसार में बहुत बड़ा कलाकार ही बन सकता है न वैज्ञानिक ही।

संसार के जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सब शरीर से कुछ न कुछ परिश्रम किया करते थे। महात्मा टालस्टाय जूता बनाने का काम करते थे। एमरसन अपनी बाटिका में अपने आप पानी दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते थे और हमारे बापू तो अपना हर काम अपने ही हाथ से करते थे।

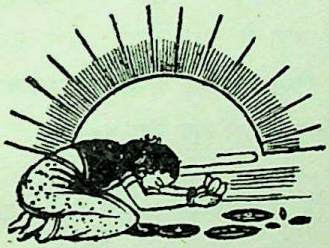

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम-स्वराज्य

ग्राम-स्वराज्य की मेरी कल्पना यह है कि वह एक ऐसा पूर्ण प्रजातन्त्र होगा, जो अपनी अहम जरूरतों के लिए अपने पड़ौसी पर भी निर्भर नहीं रहेगा और फिर भी बहुतेरी दूसरी जरूरतों के लिए, जिन में दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा, वह परस्पर सहयोग से काम लेगा। इस तरह हरेक गांव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरत का तमाम अनाज और कपड़े के लिए कपास खुद पैदा कर ले।

हरेक गांव में गांव की अपनी एक नाटकशाला, पाठशाला और सभा भवन रहेगा। पानी के लिए उसका अपना इन्तजाम होगा। बुनियादी तालीम के आखरी दर्जे तक शिक्षा सबके लिए लाजमी होगी। जात-पात जैसे भेद आज हमारे समाज में बिलकुल न रहेंगे।

—गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar